श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

प्रथम वर्ष - अभ्यास - २

जुलाई-२०२३

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ६. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. भोजन का प्रभाव हमारे मन पर और उसके द्वारा ..... पर पडता है ।
२. वस्तु के विशेष धर्म को विशेषोपयोग और .....भी कहते हैं ।
३. जिस क्रिया अथवा नियमो के अनुसरण से श्रद्धारुप सम्यग्दर्शन की वृद्धि हो वह ..... है ।
४. ..... स्थान में रहकर बच्चे अपमार्ग पर चले जानी की संभावना रहती है ।
५. बाहुबलि ने प्रभु को पाँच बार आवाज दी, तभी से लोगों में ..... पुकारने की प्रथा चली ।
६. जैन ध्वज में केशरी रंग है जो ..... पद दर्शक है ।
७. सब के साथ प्रेम मैत्री के संबंधो में आग लगाने वाले क्रोध को जीतकर ..... की साधना करनी पडती है ।
८. जीवन में शांति और प्रसन्नता का साम्राज्य स्थापित करना है तो ..... का त्याग कर देना चाहिये ।
९. ..... के दिल से निकली आहों में हरेभरे बाग को जंगल में तब्दिल करने की ताकत है ।
१०. अर्थोपार्जन के हरेक पुरुषार्थ के साथ ..... के मर्यादापालन की अत्यंत आवश्यकता है ।
११. यदि ..... में हर्ष है तो वियोग में शोक होगा ही ।
१२. सभी दुःखो और दुर्गतीओं का अन्त लाने का उपाय है ..... का ज्ञान ।
१३. सभी जीवों के सुख की उत्कृष्ट भावना ही अंततः ..... का निर्माण करती है ।
१४. पुद्गल के समुह से प्रगट होती आत्मा की विशेष प्रकार की जीवन शक्ति वह ..... कहलाती है ।
१५. जहाँ ज्ञानी और ..... के सत्संग की ही संभावना नहीं है, तो उनकी सेवा कहाँ से आयेगी ?
१६. लब्धि वीर्य ..... के क्षयोपशम से प्राप्त होता है ।
१७. अग्नि ..... है ।
१८. जिसकी संपति सात क्षेत्र में नहीं वापरी जाती वह ..... में बरबाद हो जाती है ।
१९. मन को दुष्ट विचारों में प्रवृत्त न होने देना ..... है ।
२०. जीवन में गुणों की आवश्यकता है, उन गुणों को ..... के नाम से जाना जाता है ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. ऋषभदेव के दर्शन से किसे जाति स्मरण ज्ञान हुआ ?
२. पिता की भक्ति के लिये किसने विवाह न करने की और राजा न बनने की प्रतिज्ञा ली थी ?
३. मन,वचन,काया से उत्पन्न होती असत् प्रवृति को रोकना क्या है ?
४. नमि विनमि को प्रसन्न होकर किसने विद्यायें दी ?
५. ऋषभदेव प्रभु के प्रथम गणधर कौन थे ?
६. इच्छा निरोध कौनसा तप है ?
७. श्वास लेकर छोडने की शक्ति विशेष क्या है ?
८. प्रभु ऋषभदेव का निर्वाण अवसर्पिणीकाल के कौनसे आरे में हुआ ?
९. मनपसंद के उपर राग और नापसंद के उपर द्वेष किसे नहीं होता ?
१०. प्रणिपात सूत्र में पूज्यों को कैसे संबोधित करते हैं ?
११. कौन से जीव किसी वस्तु को छेद-भेद नहीं सकते परंतु अन्य वस्तु से इनका छेदन भेदन हो सकता है ?
१२. "कप्पवडिंसिया" क्या है ?
१३. भगवान महावीरस्वामी के जीव को तीर्थंकरपद तक पहुँचाने वाला कौन सा गुण था ?
१४. पंच·परमेष्ठी के बहुमान से किन दुःखो का नाश होता है ?
१५. सर्व गुणों का नाश करने वाला कषाय कौनसा ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१) मत्थअेण २) अपज्जता ३) धारयति ४) अभिनिवेश ५) मुम्मुर ६) पल्लंका ७) पत्तेआ ८) ज्ञायते ९) असन्नि
१०) खमासमणो ११) क्रमसे १२) भूमिफोड़ाय १३) निउण १४) चरन्ति १५) उवओगा १६) उष्मामग १७) आणपाण
१८) साहारण १९) जीयठ्ठाण २०) तापयति.

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B
१) रायपसेणी	१) कषाय
२) मान	२) अंग
३) भीष्म पितामह	३) मद
४) अजीर्ण	४) पालक
५) सुकृत	५) गांगेय
६) ऐश्वर्य	६) द्विइन्द्रिय
७) अनंतकाय	७) रोगो का मूल
८) इल्ली	८) चतुरेन्द्रिय
९) मक्खी	९) अनुमोदना
१०) समवायांग	१०) उपांग

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. मार्गानुसारी के गुण कितने ?
२. नमि-विनमि को धरणेन्द्र ने कितनी महाविद्यायें दी ?
३. संज्ञी पंचेन्द्रिय को कितने प्राण ?
४. ऋषभदेव प्रभु के साथ एक समय में कितने सिद्ध हुए ?
५. बुद्धि के गुण कितने ?
६. शीयलव्रत की वाड कितनी ?
७. आचार्य भगवन के गुण कितने ?
८. उपयोग के प्रकार कितने ?
९. ऋषभदेव प्रभु का आयुष्य कितना ?
१०. चारित्र के प्रकार कितने ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. जिस क्रिया अथवा नियमो के अनुसरण से सम्यक् तप की वृद्धि हो वह चारित्राचार ।
२. जैन ध्वज के मध्य में स्वस्तिक है ।
३. उपाध्याय महाराज के २५ गुण होते हैं ।
४. अपने जीवन में उद्भट वेश का त्याग कर उचित वेश का परिधान करना चाहिये ।
५. बलीन्द्र ने उपर की बांयी दाढ़ा ली ।
६. भरत महाराज ने धर्मचक्र तीर्थं प्रवर्तित किया ।
७. बयालीस दोष रहित ढूंढकर गोचरी लेना एषणा समिति ।
८. अर्णिकाचार्य स्वयं के जख्म में से रक्त की बूंदे पानी में गिरते देख अस्वस्थ हो गये ।
९. स्पर्श और घ्राणेन्द्रिय सहित जीव द्वीइन्द्रिय है ।
१०. मन वचन काया के आलंबन से प्रवर्त वीर्य वह करण वीर्य ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. केवलज्ञानी को भी समय समय पर ज्ञान में से दर्शन में तथा दर्शन में से ज्ञान में सादि अनंत परिवर्तन चालू रहता है ।
२. राजन, किले की नींव में नीति से प्राप्त दस मोहरे डाल दे ! काम बन जायेगा ।
३. द्वारपर अतिथि का आगमन भी पुण्य योग का उदय माना जाता है ।
४. जब ज्ञान शक्ति का उपयोग हो तब वह ज्ञानोपयोग है ।
५. प्रभु समवशरण में पूर्वद्वार से प्रविष्ट हुए ।
६. शास्त्र कहते हैं, सुई के अग्रभाग जितने साधारण वनस्पतिकाय में अनंत जीव हैं ।
७. मन को सतत अशुभ निमित्त और आलंबन मिलते जाने से धर्म,दया,क्षमा,करुणा आदि गुण गायब हो जाते है ।
८. जीव विचार जानने के पश्चात भी अपने जीवन में जयणा न आवे तो अपना ज्ञान निष्फल होता है ।
९. शील रक्षा के लिये अपनी लक्ष्मण रेखा का कभी भी उल्लंघन नहीं करना चाहिये ।
१०. संवेग निर्वेद युक्त देशना सुनकर भरत महाराज के पुत्र ऋषभसेन को वैराग्य हुआ ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. ओम
२) ऋषभदेव प्रभु का केवलज्ञान कल्याणक
३) जैसा संग वैसा रंग
४) पर्याप्ति
५) वायुकाय और उसकी विराधना